भारतीय परिप्रेक्ष्य में जॉन होल्ट के अनुभव, दर्शन और शैक्षिक विचारों की उपादेयता

भूपेन्द्र सिंह*
पतंजलि मिश्र**

बालकों द्वारा विभिन्न परिस्थितियों में उत्पन्न समस्याओं का समाधान करने, उनके द्वारा स्वतंत्र विचार करने तथा स्वयं का दृष्टिकोण विकसित करने का भाव जॉन होल्ट के अनुभवों में सहज ही दृष्टिगोचर होता है। उनके अनुभवों के केंद्र में हमेशा शिक्षार्थी और शिक्षक, दोनों ही रहे हैं। उन्होंने अपने दिन-प्रतिदिन के अनुभवों से बालकों की आवश्यकताओं, रुचियों, मनोवेगों, ज्ञान ग्रहण करने के तरीकों, क्षमताओं आदि को जानने और समझने का प्रयास किया, साथ ही साथ शिक्षकों को इन समस्त आयामों के विकास, यथोचित परिवर्तनों के अनुसार स्वयं को शिक्षण के लिए तैयार होने के लिए संकेत किया है। होल्ट के अनुसार, बालक, शिक्षा, शिक्षक, विद्यालय और वातावरण इन सभी का संयोजन वास्तविक और यथार्थवादी ज्ञान की रचना करने में सक्षम है। अतः उन्होंने बालकों के सीखने, असफल होने, विरक्ति और पलायन के लिए शिक्षक और विद्यालयों को ज़िम्मेदार मानते हुए, दोनों को मिलकर पलायन को रोकने, कक्षा-कक्ष को आनंद का स्थान बनाने एवं बालक के सफल होने के साथ ही उसके सीखने को स्थायित्व प्रदान करने की दिशा में प्रयासरत रहने का उदाहरण प्रस्तुत किया है। सबसे महत्वपूर्ण यह कि उन्होंने बालकों के लिए कुछ आवश्यक अधिकारों की पैरवी कर उनके सुखद जीवन की कामना की है। प्रस्तुत लेख में इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि कैसे हम जॉन होल्ट के अनुभवों से भविष्य के शिक्षकों के लिए निहितार्थ एवं मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं।

जॉन होल्ट — एक सामान्य परिचय

जॉन काल्डवेल होल्ट का जन्म 14 अप्रैल, 1923 को न्यूयॉर्क (अमेरिका) में हुआ था। वहीं उनकी प्रारंभिक शिक्षा पूर्ण हुई। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान वे संयुक्त राज्य की अमरीकी नौसेना में रहे। जहाँ, वे अपने जीवनकाल में विश्व सरकार उपक्रम (World Government Movement) के कई विभागों में कार्यरत रहे तो वहीं उन्होंने कारबंडेल के कोलोराडो रॉकी माउंटेन विद्यालय, कैम्ब्रिज के शेडी हिल एवं लेस्ली एलिस विद्यालय, बोस्टन के कॉमनवेल्थ विद्यालय, हार्वर्ड ग्रेजुएट विद्यालय ऑफ़ एजुकेशन एवं यूनिवर्सिटी ऑफ़ केलिफोर्निया में अध्यापन

* *शोधार्थी*, शिक्षा विद्यापीठ, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान 324 010
** *सहायक आचार्य*, शिक्षा विद्यापीठ, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान 324 010

किया। अपने अनुभवों से उन्होंने कई पुस्तकें भी लिखीं। इस महान शिक्षक और दार्शनिक की 14 सितम्बर, 1985 को बोस्टन में अपने घर में कैंसर के कारण मृत्य हो गई।

प्रत्येक व्यक्ति के सोचने, समझने, चिंतन आदि से मिलकर बने दृष्टिकोण से उनके एक दर्शन की उत्पत्ति होती है। प्रत्येक व्यक्ति का दर्शन पृथक-पृथक अवधारणाओं को लिए होता है। अलग-अलग व्यक्तियों द्वारा किसी पुस्तक को पढ़ने, चलचित्र को देखने अथवा प्रयोग को प्रयोगशाला में दोहराने के बाद व्यक्त विचारों में समानता हो, यह आवश्यक नहीं है। वास्तव में, किसी व्यक्ति का दृष्टिकोण ही उसका दर्शन समझा जाना चाहिए। होल्ट, एक शैक्षिक दार्शनिक के रूप में शिक्षक को तब तक धैर्यवान बने रहने को कहते हैं, जब तक की बालक पहला कदम नहीं उठाता। वे पहले बालक को किसी भी कार्य की शुरुआत करने तक इंतज़ार करने एवं केवल उसका मार्गदर्शन करने की सलाह देते हैं। होल्ट अध्यापक को तब जान-बूझ कर गलती करने को कहते हैं, जब बालक उस गलती को पकड़ सकने की क्षमता विकसित कर चुका हो। ताकि कक्षा में विजित होने एवं अधिक जानने की इच्छा का भाव बालक में जाग्रत किया जा सके। होल्ट ने अपने अनुभवों में जो महसूस किया, वही उन्होंने अपनी पुस्तकों में लिखा। उनके लेखन में कल्पनाओं और असत्यता का कोई स्थान नहीं है। शिक्षा और शिक्षण पृथक न होने की वजह से शिक्षक और शिक्षार्थी का अस्तित्व एक-दूसरे के बिना शून्य है। होल्ट का शिक्षा दर्शन एक मिला-जुला दर्शन प्रतीत होता है। जहाँ होल्ट का प्राकृतिक वातावरण में अध्ययन का विचार प्राचीन भारतीय दर्शन का समर्थन करता है तो वहीं तकनीक समागम पाश्चात्य दर्शन को भी शामिल करता है।

सीखने और सिखाने की स्थायी परिस्थितियों का निर्माण

सीखने के लिए अनौपचारिक वातावरण हमेशा उपयुक्त होता है, लेकिन यह वातावरण अस्थायी भी होता है। अतः एक स्थायी रूप से अनुकूल वातावरण के लिए विद्यालयों और कक्षा-कक्षों की ज़रूरत महसूस हुई। घनी बढ़ती आबादी, अधिकाधिक निर्माण, दैनिक-दिनचर्या, सामाजिक परिवर्तन, तकनीक का विकास आदि के कारण परिस्थितियाँ भी हमेशा अनुकूल नहीं रह पाती हैं। इसीलिए सीखने और सिखाने की परिस्थितियाँ स्वयं शिक्षक और विद्यालय को मिलकर तैयार करने की तरकीबें सोचनी होंगी। एक अनिवार्य, दमनपूर्ण एवं प्रतिस्पर्धात्मक विद्यालय के अंदर बेहतर तरीके से कार्य करने की परिस्थितियाँ क्यों उत्पन्न नहीं की जा सकतीं, के पक्ष में होल्ट का मत है कि प्राकृतिक वातावरण के सिद्धांतों को पढ़ने के बजाय, अनुप्रयोग पर ध्यान दिया जाना चाहिए। कक्षा में बोलने की स्वतंत्रता, कार्य करने की सक्रियता, पारस्परिक विचार-विमर्श की हलचल, आपसी सहयोग, रोमांच, ऊर्जा एवं आनंद जितना अधिक होगा, उतना ही वैयक्तिक विभिन्नताओं को निखर के सामने आने का अवसर मिलेगा। आज एक विद्यालय को निम्न सुधार करने की आवश्यकता है —

- किसी भी भाषा को पढ़ने की स्वतंत्रता प्रदान करना;

- बालक का जब तक मन करे, तब तक पढ़ने की आज़ादी;
- बालक पर अच्छे अथवा बुरे विद्यार्थी होने का कोई व्यक्तिगत लेबल न लगाना;
- बालक के बारे में कोई सार्वजनिक निर्णय अथवा उपाधि न देना;
- रचनात्मक कला (Creative Arts) के लिए पृथक से कक्षा-कक्ष तैयार किया जाए; और
- स्वयं करो या करके देखो से संबंधित रचनात्मक कार्य बालकों को गृहकार्य के रूप में दिया जाए।

भाषा (ओं) के सीखने पर ज़ोर

भाषा, विचारों को, शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्त करने का स्पष्ट एवं सशक्त साधन है। जॉन होल्ट भाषा को सीखने की बाध्यता करने से बचने की सलाह अवश्य देते हैं। परंतु उससे होने वाले फ़ायदों के बारे में उनका मत है कि एक से अधिक भाषा सीखने का मतलब यह बिलकुल भी नहीं की इससे कोई नौकरी मिल जाएगी या हम सफल और संपन्न हो जाएँगे, बल्कि हम जीवन का ओर अधिक लुत्फ़ उठा सकेंगे, भीड़ से अलग होने का अहसास कर सकेंगे और बहु-भाषी होने के नाते हम अपने लिए अधिक एवं नये रोज़गारों के अवसरों का सृजन कर सकेंगे (होल्ट, 2011, पृष्ठ 16–17)।

एक प्रतिपालक (Mentor) के रूप में शिक्षक

दैनिक जीवन में कई ऐसे शब्द सुनने को मिल जाएँगे, जैसे—मेरे, अपने, हमारे, आपके या उनके गुरुजी/अध्यापक/सर, अकसर ऐसे शब्द सुनने में तो सामान्य से प्रतीत होते हैं, लेकिन वास्तव में अपनेपन की भावना से प्रेरित होते हैं। शिक्षक और शिष्य एक-दूसरे को प्रतिबिंब के रूप में देखते हैं। जहाँ शिष्य अपने शिक्षक का अनुसरण करता है, वहीं शिक्षक अपने ज्ञान को फलित होने का बिंब शिष्य में देखकर प्रसन्न होता है। होल्ट सभी शिक्षकों को दो तरह के शिक्षकों में से चयन का खुला अवसर प्रदान करते हैं। उनके अनुसार पहला, शिक्षक, जो सीखने वालों को सीखने में मदद करते हैं, जो विषय-वस्तु उन्होंने स्वयं अपनी मर्ज़ी से तय की है। जबकि दूसरी तरह के शिक्षक, जो सिखाने का प्रयास करते हैं, लेकिन वे किसी और द्वारा तय विषय-वस्तु सिखाते हैं (होल्ट, 2011, पृ. 21)। होल्ट के अनुभवों के माध्यम से शिक्षक को एक प्रतिपालक के रूप में स्थापित करने की छवि को महसूस करने का अवसर प्राप्त होता है। एक सही शिक्षक बच्चों को यथार्थ के लिए तैयार (होल्ट, 2011, पृ. 180) करता है। अतः भविष्य के शिक्षक को शिक्षक के साथ प्रतिपालक बनने के लिए—

- व्यवहार में नम्रता एवं उदारशीलता रखनी चाहिए;
- शिक्षार्थी पर विश्वास करना चाहिए;
- शिक्षार्थी का सम्मान करना चाहिए;
- वास्तविक ज्ञान देने का प्रयास करना चाहिए;
- करके सिखाने पर ज़ोर देना चाहिए;
- स्वयं के निर्णय-निर्माण में सहायता करनी चाहिए; तथा
- माता-पिता की तरह शिक्षार्थी की देखभाल करनी चाहिए।

जॉन होल्ट के अनुभवों के वर्तमान संदर्भों में शैक्षिक निहितार्थ

होल्ट के अनुभवों से वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षण रणनीतियों के निर्माण में सहायता मिल सकती है।

उनके अध्यापन के दौरान वे अपने विद्यार्थियों को सिखाने के लिहाज़ से जानबूझ कर शब्दों को गलत लिख दिया करते थे। ऐसा वे तब तक करते थे, जब तक की विद्यार्थी सही शब्द को नहीं पहचान लेता। उदाहरण के लिए, उनकी एक विद्यार्थी एमिली, जो माइक्रोस्कोपिक शब्द को मिन्कोपर्ट के रूप में पहचानती थी, को सिखाने के लिए मिन्कोपर्ट ही तब तक लिखते रहे, जब तक की एमिली ने ही उस शब्द को गलत बताकर माइक्रोस्कोपिक नहीं कर दिया (होल्ट, 2011)। उदाहरण के ज़रिये होल्ट शिक्षकों को यह बताना चाह रहे हैं कि अध्यापक को तब तक धैर्यशील होना चाहिए, जब तक की बालक या शिक्षार्थी स्वयं यह एहसास न करने लगे की उसका उत्तर गलत है ताकि बार-बार के अभ्यास एवं त्रुटि (थार्नडाइक, 1898, पृ. 41) से सही जानने की जिज्ञासा उसके मन में स्वयं उत्पन्न हो। ज़बरदस्ती का ज्ञान उसके अंदर परिवर्तन नहीं ला सकता। अतः एक अध्यापक को कभी-कभी गलतियों के माध्यम से सिखाने का भी प्रयास करना चाहिए।

होल्ट ने अध्यापकों की गलतियों को भी नज़रअंदाज़ नहीं किया। गलती भरे अनुभव के एक संस्मरण में होल्ट लिखते हैं कि एक दिन एक अध्यापिका जब कक्षा "क्रिया" के बारे में पढ़ा रही थीं तो उन्होंने बताया कि जहाँ कुछ करने का भाव हो वही क्रिया है। जब उदाहरण के लिए यह पूछा की "ड्रीम" शब्द क्या है? तो बालक का जवाब था — क्रिया। अध्यापिका ने पूछा कैसे? तो बालक का उत्तर था कि मैंने ट्रोजन के युद्ध का ड्रीम देखा। उक्त संस्मरण के माध्यम से होल्ट समझाना चाहते हैं कि शिक्षक द्वारा पढ़ाते समय पाठ्यवस्तु का पूर्ण ज्ञान देना आवश्यक है और ज्ञान देने के लिए जो उदाहरण प्रस्तुत किए जाएँ, वे भी युक्ति-युक्त एवं विषय-वस्तु संगत हों, अन्यथा बालक की स्थिति चक्रव्यूह में फँसे अभिमन्यु की भाँति होगी।

होल्ट के अनुभवों से एक बात यह भी सीखने को मिलती है की बालकों के मन में व्याप्त भय को निकालने के लिए विद्यार्थियों को आपस में एक-दूसरे से प्रश्न करने एवं उनका उत्तर स्वयं ढूँढ़ने के लिए प्रेरित किया जाए ताकि भविष्य में कहीं भी उनसे कोई कुछ पूछने लगे तो बेझिझक, बिना संकोच के उत्तर देने के लिए तैयार रहें, चाहे उत्तर गलत ही हो अर्थात् वाक्-चातुर्यता का विकास बालकों में किया जाने का यह अच्छा उपाय है। होल्ट के अनुसार बालकों को बार-बार रोकने और टोकने की प्रवृत्ति भी अध्यापकों और अभिभावकों को छोड़नी होगी। क्योंकि स्वतंत्र होकर विचार करने और स्वयं समस्याओं से उलझ कर समाधान ढूँढ़ने, स्वयं को पहचानने, स्व-अनुशासित होने, स्व-प्रेरित होने और अपने उत्तरदायित्वों के लिए जागरूक होने, भाव आदि का विकास तभी हो पाएगा।

शिक्षक को स्वयं के अंदर के बालक को पहचानने की आवश्यकता

जॉन होल्ट का मत है कि विश्व में ऐसा कोई-सा भी ज्ञान नहीं है जो सीखा न जा सके बशर्ते बच्चा बनने की क्षमता होनी चाहिए। क्षमता इसलिए कि बच्चा बनना हर किसी के बस की बात नहीं। क्योंकि बच्चों पर विश्वास करने से पहले हमें खुद पर भरोसा करना सीखना चाहिए और हम में से ज़्यादातर को यही

सिखाया गया है कि बच्चे भरोसे के लायक नहीं होते हैं (होल्ट, 1993)। होल्ट के अनुसार, हम बच्चों से वह सीखते हैं, जो किसी पुस्तक या ग्रंथ में नहीं मिल सकता और वह है—निष्पक्ष होने का भाव। एक शिक्षक भी निष्पक्ष होकर अध्ययन कराने लगे अर्थात् इस विचार को त्याग दे कि वह जिस विषय को पढ़ा रहा है, वही सब कुछ है (जैसा प्रत्येक विषय अध्यापक की अभिवृत्ति होती है) तो जो ज्ञान वितरित होगा, वह सार्वभौमिक व सर्वकालिक होगा। बच्चा बनने के लिए सबसे आवश्यक है जिज्ञासा और जो जानने की इच्छा रखता है, वही वह बच्चा बनने की क्षमता रखता है। अतः एक शिक्षक को बच्चों की प्रकृति और मनोभावों को जानने का प्रयास करना चाहिए। क्योंकि बच्चों को विद्यालय जाने और डॉक्टर के पास जाने, दोनों परिस्थितियों में समानता दिखाई देती है। डॉक्टर भले ही लाख दलीलें दे डाले, परंतु बच्चे का ध्यान दवा के कड़वे स्वाद और जीभ पर होने वाले ज़ुल्म पर ही केंद्रित रहता है अर्थात ज्ञान को सरल से सरलतम बनाने के लिए शिक्षक को एक बालक की तरह सोचने और विचारने की ज़रूरत है। इसके लिए शैक्षिक कार्टूनों, फ़िल्मों, कार्यकारी प्रतिमानों (Working Models) और दैनिक जीवन से जुड़े उदाहरणों आदि का सहारा लिया जाना चाहिए।

आधुनिक शिक्षक के गुणों में आवश्यक परिवर्तन

जॉन होल्ट के अनुभवों से शिक्षक, आवश्यकता एवं समयानुसार परिवर्तित होने की सीख ले सकते हैं। होल्ट ने अपने दिन-प्रतिदिन के अनुभवों को इसलिए लिखा होगा ताकि आने वाली शिक्षकों की पीढ़ियाँ लाभ ले सकें। होल्ट के अनुभवों से नवीन युक्तियों एवं नवाचारों को अपनाने की प्रेरणा मिलती है। उदाहरण के लिए, अध्यापक फ़िल्मों के माध्यम से भी सीख एवं सिखा सकते हैं। जैसे दिसम्बर 2009 में *तारे ज़मीन पर*, दिसम्बर 2009 में *थ्री इडियट्स*, अगस्त 2011 में *आरक्षण*, जनवरी 2016 में *चॉक एन डस्टर* जैसी कई फ़िल्में शिक्षकों के लिए प्रेरणास्पद रही हैं। इन फ़िल्मों के माध्यम से समाज में शिक्षक के स्थान, शिक्षक की गरिमा, शिक्षक के व्यवहार और शिक्षक के ज्ञान को प्रचारित किया गया है। जहाँ एक मंदबुद्धि बालक को उसकी समझ के अनुसार विकसित करने में लगा शिक्षक (तारे ज़मीन पर), एक ज्ञान के वास्तविक स्वरूप को जानकर स्वयं में बदलाव लाता शिक्षक (थ्री इडियट्स), एक सामाजिक समानता के लिए ज्ञान बाँटता शिक्षक (आरक्षण) और शिक्षक के आत्मविश्वास (चॉक एंड डस्टर) को दिखाया गया है। होल्ट के विचार उनकी पुस्तकों के माध्यम से यही संदेश देना चाहते हैं। यदि हम वसुधैव कुटुम्बकम् (हेचर, 1994; रंगनाथन, 2015) के साथ-साथ विचारों में समानता हेतु कोई मूलमंत्र उत्पन्न कर पाने में सक्षम हो गए तो शिक्षा की पूर्णता की तरफ़ वह पहला कदम होगा। जॉन होल्ट के अनुसार एक शिक्षक में निम्न विशेषताएँ हों तो सीखने की क्रिया को सुगम, सफल और बेहतर बनाया जा सकता है —

- शिक्षक के आदर्शों में लचीलापन हो;
- बालक में अध्ययन की इच्छा जाग्रत करने की क्षमता हो;

- बालकों से स्नेह करने वाला हो;
- समयानुकूल उपयुक्त शिक्षण विधि द्वारा शिक्षण कराए;
- लोकतांत्रिक नीति से कक्षा का संचालन करे;
- मृदुल वाणी और नम्र व्यवहार हो;
- मित्रवत मार्गदर्शन करने वाला हो;
- ज़बरदस्ती का ज्ञान थोपने वाला न हो;
- पूर्वाग्रहों से परे होकर सोचने वाला हो;
- सभी प्रकार के विचारों का स्वागत करने वाला हो;
- स्वयं के विषय का ज्ञाता हो;
- शिक्षाशास्त्र की जानकारी रखता हो;
- कर्तव्यनिष्ठ हो;
- समर्पण की भावना हो; तथा
- शिक्षक की कथनी और करनी में अंतर न हो।

विद्यालय की कार्यप्रणाली में परिवर्तन

एक दिन लेखक प्रसिद्ध संगीत निदेशक ए. आर. रहमान का गाया हुआ गाना "सवेरे-सवेरे यारों से मिलके, बन-ठन के निकले हम, विद्यालय चले हम" सुन रहा था तो उन्हें विचार आया कि जॉन होल्ट ने अपनी पुस्तक *शिक्षा की बजाय* में दो ऐसे स्कूलों का ज़िक्र किया है, जिनमें से एक बालक का मनपसंद स्थान है, जहाँ जब चाहो, जो चाहो पढ़ो या खेलों, वह भी पूर्ण आज़ादी के साथ और दूसरा ज़बरदस्ती के ज्ञान का जेल जहाँ निकलने से पहले शब्दों को भी कुचल-मसल दिया जाता है, वहाँ अध्यापक भी भिन्न-भिन्न तरह के ही मिलेंगे। मनपसंद वाले विद्यालय में अनुभवी, दक्ष, विद्वान, निष्ठावान और एक-दूसरे के प्रति आदर, विश्वास और प्रेम के प्रतीक शिक्षक मिलेंगे, जबकि ज्ञान के जेल में अधिकार, सत्ता और दंड की पद्धति पर चलने वाले शिक्षक मिलेंगे। इससे विद्यालयों को यह सीख लेनी चाहिए की विद्यालय और शिक्षक, बालक को केंद्र में रखकर उसकी सफलता की कामना करें। किसी के अधिकार अथवा न्यायालय के आदेश से नहीं अंतर्मन के आदेश को मानकर दंड देने से बचने का प्रयास करें और यदि दंड देना ही है तो अवश्य दें लेकिन सकारात्मक, जैसे— "जो बालक उत्तर बता दे, उसे सामने बुलाकर सिर पर स्नेह का हाथ रखें, ज़ोर देकर कहें बहुत सुंदर, वैरी वैरी गुड, शाबाश, कक्षा में सबसे अच्छा बच्चा... (शिक्षार्थी का नाम), बाकि सभी बच्चे भी अच्छे बनने की कोशिश करेंगे। ऐसा करने से कक्षा में उत्साह तो होगा ही और वातावरण भी भय-मुक्त होगा। शिक्षक और विद्यालयों को यह समझने की आवश्यकता है कि ज्ञान के उपयोग को सिखाएँ, डिग्री तो बालक हासिल कर ही लेगा।

आदर्श ज्ञान से वास्तविक ज्ञान की ओर

भारतीय ज्ञान परंपरा वास्तविक परिस्थितियों में व्यक्ति के दैनिक जीवन के लिए उपयोगी अनुप्रयोगों की पक्षधर रही है। जर्मन दार्शनिक आर्थर शॉपनहॉवर का कहना कि, "मैं वेदों में वर्णित मूल उच्च विचारों को उच्च और पवित्र गंभीरता से स्वीकार करता हूँ।" वे हमें पुनः हमारे अतीत से ही ज्ञान के बीज ढूँढ़ने को संकेत करते हैं। वैसे अमेरिकन दार्शनिक और इतिहासकार हेनरी डेविड थॉरो भी मानते हैं कि सुबह में, मैं अपनी बुद्धि को भगवद्गीता के अद्भुत दर्शन में स्नान कराता हूँ, जिसकी तुलना में हमारी आधुनिक दुनिया और इसका साहित्य क्षीण और तुच्छ दिखाई

देता है (ओसबोर्न, 2014)"। दुनिया भर के अधिकांश आधुनिक अध्यापकों का मानना है कि जो अनिवार्य है और प्रतिस्पर्धात्मक है, वही शिक्षा है। होल्ट की विचारधारा प्राचीन भारतीय ज्ञान से मिलती-जुलती है। उनका मानना है कि शिक्षा वह है जो ग्रहण की जाए, न कि दी जाए। उनके अनुसार, स्वयं करके ग्रहण करने में शारीरिक और मानसिक क्रियाओं का संयोजन आवश्यक है। इसके लिए कोई स्थान तय नहीं है। आज शिक्षक को सिद्धांतों और नियमों से परे हटकर बालक को प्रशिक्षित करने के साथ-साथ योग्य बनाने का हर संभव प्रयास करना चाहिए।

क्षमताओं की समझ एवं बच्चों के अधिकार

होल्ट ने अपने अनुभवों में सबसे अच्छा संदेश यह दिया है कि बालकों की क्षमताओं की पहचान करना अर्थात् जो कुछ उसके अंदर है और वह स्वयं पहचान नहीं पा रहा है। अतः एक अध्यापक को मनोविज्ञान विषय का भी ज्ञान होना चाहिए। दूसरी तरफ़, होल्ट, एक शिक्षक को, बालकों की क्षमताओं का ज्ञान कराने के साथ उस ज्ञान का अनुप्रयोग करने की सलाह भी देते हैं। होल्ट (2014) ने बालकों के लिए स्वतंत्र विश्लेषण, निर्णय क्षमता और आत्मबल का विकास करने के लिए प्रतिनिधि चुनने का अधिकार, बालक को स्वतंत्र रूप से आत्मनिर्भर होकर जीविकोपार्जन करने, अस्तित्व निर्धारण करने, समय का सदुपयोग करने, आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए काम करने का अधिकार, वैयक्तिकता को सुरक्षित करने हेतु स्वामित्व का अधिकार आदि का एक उदाहरण प्रस्तुत किया है।

बड़ों के दायित्व (माता-पिता, अभिभावक)

होल्ट के अनुसार माता-पिता और अभिभावक को बालकों को समझने के लिए उनके साथ मित्रवत व्यवहार करने की ज़रूरत है। बालक आजकल छोटी-छोटी बातों पर बड़ी जल्दी नाराज़ हो जाते हैं। ऐसे में बालकों पर अपना प्रभुत्व समझने के बजाय उनसे स्नेह के साथ बात की जाए तो समस्या को वे बेझिझक बता भी सकेंगे और उसका समाधान भी किया जा सकेगा। रूढ़िवादिता और कठोरता बड़ी हानि का कारण भी बन सकती है। इसीलिए उनकी पहरेदारी करने के बजाय उन पर विश्वास किया जाए तो बालकों को सही दिशा दी जा सकती है। विचारों के कुठाराघात तथा शारीरिक और मानसिक प्रताड़ना से बालक में प्रतिद्वंद्विता, घृणा और अविश्वास का भाव उत्पन्न होने लगता है। वास्तव में, यदि एक पिता अपने पुत्र से शतरंज के खेल में हार भी जाए तो उसे गर्व होना चाहिए। उसी प्रकार एक शिष्य की सफलता एक श्रेष्ठ शिक्षक के लिए हमेशा गौरव की ही बात होनी चाहिए।

शैक्षिक निहितार्थ

जॉन होल्ट के अनुभव उनकी अपनी परिस्थितियों पर आधारित हैं। परंतु एक शिक्षक होने के नाते उनकी विचारधारा अन्य शिक्षकों के लिए उपयोगी हो सकती है। उनके अनुभवों से शिक्षक, माता-पिता, अभिभावक और विद्यालय को एक बालक को जानने, उसकी प्रकृति को समझने, उसके व्यवहारों से परिचित होने एवं उसके अनुसार शिक्षण, विषय-वस्तु, पाठ्यचर्या, कक्षा-कक्ष एवं विद्यालय वातावरण आदि में बदलाव करने में मदद मिल

सकती है। होल्ट के अनुभवों से यह सीखा जा सकता है कि बालकों को सीखने के लिए स्वतंत्र छोड़ देने, प्राकृतिक वातावरण में बालक को सिखाने, नियमों को सरल बनाने से उनकी उपलब्धियों में वृद्धि की जा सकती है। आज आवश्यकता है, बालक को विपरीत परिस्थितियों के लिए तैयार करने की, समस्याओं से सामना करने के लिए तैयार करने की और परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाना सिखाने की।

निष्कर्ष

आज के संदर्भ में ज्ञान प्रदान करने के लिए परिस्थितियों का निर्माण करने की आवश्यकता है। विद्यालय को शहर व भीड़ से दूर कब तक और कहाँ तक ले जाया जाएगा? आधुनिक तकनीकों से विद्यालयों एवं कक्षा-कक्षों को ध्वनि रोधक बनाने के प्रयास किए जाने चाहिए और बालक को परिस्थितियों के साथ सामंजस्य बिठाना सिखाया जाना चाहिए। अपना ज्ञान बालकों पर थोपने के बजाय उनका स्वयं सीखने के लिए प्रेरित किया जाए। होल्ट ने अपनी पुस्तक *असफल विद्यालय* में लिखा है कि शिक्षण का कार्य कठिन कार्य है। मुझे अपने शिक्षण के काम को बहुत ही अनुकूल परिस्थितियों में करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मुझे खुद अपने तरीकों और सामग्री को चुनने और गढ़ने की पूरी छूट मिली। अतः शिक्षक को बालक को सिखाने के लिए परिस्थितियों को अनुकूल बनाने के लिए खुद के तरीके सोचने होंगे, स्वयं सामग्री का चयन करना होगा और आवश्यकता पड़ने पर निर्माण भी करना होगा। आज के शिक्षक को बालक की अंतर्निहित समस्त शक्तियों को बाहर निकालकर उस बालक को बताना है कि तुम वह कर सकते हो जो कोई और नहीं। चीज़ों को अलग ढंग से करने की प्रवृत्ति बालकों में धीरे-धीरे उत्पन्न होने वाली सूझ ही है। दुनिया भर के वैज्ञानिक और आविष्कारक कुछ भी नया नहीं करते, बस वे हर कार्य को बिना हार माने अलग ढंग से करने की कोशिश करते हैं। अतः बालक को स्वयं में सूझ उत्पन्न करने के लिए केवल वातावरण तैयार करके देने की आवश्यकता है, अविष्कार तो वह स्वयं कर लेगा।

संदर्भ

ओसबोर्न, डेविड. 2014. *साइंटिफ़िक वेरिफ़िकेशन ऑफ़ वैदिक नॉलेज*. http://archaeologyonline.net/artifacts/scientific-verif-vedas

खान, आमिर (निदेशक). 2007. *तारे ज़मीन पर* (वीडियो फ़ाइल). https://www.youtube.com/watch?v=W1XZeI1nQos

गिलाटर, जयन्त (निदेशक). 2016. *चॉक एन डस्टर* (वीडियो फ़ाइल). https://www.youtube.com/watch?v=lZ7O2Gr5abg

झा, प्रकाश (निदेशक). 2011. *आरक्षण* (वीडियो फ़ाइल). https://www.youtube.com/watch?v=s-mu9oxiFug

थोर्नडाइक, ई. एल. 1898. *एनिमल इंटेलिजेंस— एन एक्सपेरिमेंटल स्टडी ऑफ़ द एसोसिएटिव प्रोसेसेज़ इन एनिमल्स*. मैकमिलन कम्पनी, लंदन.

पियानो, केनसेन शाई. 2017. *अवर टू आइडेंटिटी*. https://arts.stanford.edu/event/68311

रंगनाथन, राम्या. 2015. वसुधैव कुटुम्बकम (द वर्ल्ड इज़ माय फ़ैमिली)— व्हॉट हैप्पंस टू माय सेल्फ़-कांसेप्ट व्हेन आइ टेक अदर्स पर्सपेक्टिव्स? *साउथ एशियन जर्नल मैनेजमेंट*. 22(4), 118-135. http://www.iimb.ac.in/node/14965

हिरानी, राजकुमार (निदेशक). 2009. *थ्री इडियट्स* (वीडियो फ़ाइल).
https://www.youtube.com/watch?v=xCx5ZGV3CHs

हेचर, बी. ए. 1994. द कॉसमॉस इज़ वन फ़ैमिली (वसुधैव कुटुम्बकम)— प्रोब्लेमेटिक मंत्रा ऑफ़ हिन्दू ह्यूमनिज़्म. *कॉन्ट्रिब्यूशन टू इंडियन सोशियोलॉजी*. 28(1).

होल्ट, जॉन. 2014. *बचपन से पलायन— बच्चों की आवश्यकताएँ व अधिकार*. दूसरा पुनर्मुद्रण. अनुवादक, पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा. एकलव्य, भोपाल, मध्य प्रदेश.

——— 1993. *बच्चे असफल कैसे होते हैं*. अनुवादक, पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा. एकलव्य, भोपाल, मध्य प्रदेश.

——— 2011. *शिक्षा की बजाय— चीज़ों को बेहतर ढंग से करने के तरीके*. दूसरा पुनर्मुद्रण. अनुवादक, स. जोशी. एकलव्य, भोपाल, मध्य प्रदेश.